VARTMAAN PARIDRISHYA MEIN SWADESHI EVAM AATMANIRBHAR BHARAT KI PARIKALPANA : EK MAATRA VIKALP

डॉ. रतन कुमारी वर्मा
एसोि"ाएट प्रोफेसर एवं पूर्व अध्यक्ष
हिन्दी विभाग, जगत तारन गर्ल्स
पी.जी. कालेज, इलाहाबाद

वर्तमान समय में वि"व कोरोना संकट की महामारी से ग्रस्त है। इस संकट का प्रभाव जहाँ हमारे जीवन पर पड़ रहा है, वहीं इसका दूरगामी प्रभाव हमारी ि"ाक्षा व्यवस्था, रोजगार, भूख, बीमारी, विस्थापन के रूप में भी सामने आ रहा है। इस बीमारी से वि"व की जो भयावह स्थिति बन रही है, उससे निपटने के लिए हम तैयार रहने की जरूरत है। अति भौतिकतावाद की अभीप्सा, प्राकृतिक संसाधनों का क्रूरतापूर्वक आव"यकता से अधिक विदोहन आज हमें इस कगार पर ला खड़ा किया है कि हम विचार करें, सोचें, चिन्तन और मनन करें और स्वीकार करें कि प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाकर ही हम स्वस्थ जीवन जी सकते हैं। चाहे राम चरित मानस में राम राज की परिकल्पना हो या गाँधी जी के स्वप्नों का भारत जो स्वदे"ाी उद्योग धन्धों, कुटीर उद्योग, ग्राम स्वराज, बेसिक ि"ाक्षा की भावना पर आधारित था। आज इस बीमारी से निपटने में पुनः हमें उसी भारत की ओर लौटना होगा जिसमें हम आव"यकता से अधिक प्रकृति से न लें। हमारी आव"यकतायें कम हों। भौतिकतावाद की आँधी में हम अपने को न झोंके। अध्यात्मवाद की तरफ लौटें। गाँव में रोजगार पैदा किये जायें। जिससे मनुश्यों का पलायन, विस्थापन न हो। लाक–डाउन में जिस तरह बीमारी के संक्रमण द्वारा यह अपेक्षा की जा रही है कि जो मजदूर, जो व्यक्ति जहाँ पर है, वहीं पर रूका रहे। लेकिन यह कैसे संभव है। इस पर विचार करने की जरूरत है। जब जो व्यक्ति जहाँ पर है, वहीं पर उसे रोजगार मिल जाये, सरकारों के द्वारा इस तरह विकास का माडल तैयार किया जाये कि किसी व्यक्ति को रोजगार के लिए दर–दर भटकना न पड़े। इसका एकमात्र हल है कि गाँवों की आर्थिक नींव मजबूत की जाये। रहन–सहन, जीवन भौली में भारतीय पद्धति को अपनाया जाय। प्राथमिक विद्यालयों में ि"ाक्षा की गुणवत्तापूर्ण व्यवस्था हो। सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में सबसे योग्य अध्यापक चयनित होकर आते हैं लेकिन उनकी ऊर्जा का विदोहन अन्य प्र"ाासनिक कार्यो में किया जाता है। इसको रोकना चाहिए। जो व्यक्ति जिस कार्य के लिए नियुक्त

है, वह उसी के लिए उपयुक्त है। इस धारणा में हमारा वि"वास होना चाहिए। गाँव विकास का माडल बनें। गाँव में चिकित्सा सुविधाओं का मजबूत विकास होना चाहिए। अगर हम एक बार पुनः अपने गाँवों को समृद्ध बनाने में जुट जायें तो कोरोना संकट से हम अपना बचाव कर सकते हैं।

गाँधी जी की विचारधारा इन भावनाओं की पुश्टि करती है। ''गाँधी जी के आर्थिक विचारों में प्रत्येक व्यक्ति को रोजगार प्रदान किया जाना अत्यन्त आव"यक है जबकि वर्तमान अन्तर्राश्ट्रीय व्यापार का स्वरूप विकास"ाील अर्थव्यवस्थाओं में अपने प्रभाव से रोजगार में भाुद्ध वृद्धि नहीं करता है।''[1] लियोन्टिफ की 'लियोन्टिक एनामली' की अवधारणा भी इस आ"ाय की पुश्टि करती है। निर्यात के आधार पर आधारित विकास की पद्धति विकसित दे"ाों के हित में अधिक है। इससे विकसित दे"ाों को ही लाभ प्राप्त होता है और उनके दे"ा में रोजगार के अधिक अवसर उपलब्ध होते हैं। 'लियोन्टिक एनामली' के अनुसार अन्तर्राश्ट्रीय व्यापार की प्रक्रिया अब भी ऐसी है जो विकसित दे"ाों में रोजगार में भाुद्ध वृद्धि करती है और गरीब दे"ाों के रोजगार अवसरों का यह भाुद्ध विना"ा करती है। प्रो0 के0 एन0 राज ने अपने प्रसिद्ध मॉडल 'ग्रोथ विद स्टैगनेन्ट एक्सपोर्ट' में यह स्पश्ट किया है कि ''सीमित निर्यात से आर्थिक प्रणालियों का संचालन किया जा सकता है।''[2]

गाँधी जी उत्कृश्ट राजनीतिज्ञ के साथ–साथ व्यावहारिक अर्थ"ाास्त्र के भी वि"ोशज्ञ थे। गाँधी जी राश्ट्र के उत्थान के लिए उसके समग्र विकास की बात को सोचते थे। किसी भी समाज या राश्ट्र के विकास के लिए मजबूत आर्थिक आधार की आव"यकता पड़ती है। गाँधी जी का यह दृढ़ वि"वास था कि जब तक भारत के गाँवों का विकास नहीं होगा, तग तक दे"ा का विकास नहीं हो सकता। इसीलिए ग्रामीण अर्थव्यवस्था, ग्राम पंचायत– बेसिक ि"ाक्षा, कुटीर उद्योग, हथकरघा आदि की स्थापना पर बल देते थे। उनकी सबसे महत्वपूर्ण आर्थिक विचारधारा थी– स्वदे"ाी की परिकल्पना। उनकी स्वदे"ाी की परिकल्पना को ही 'आत्मनिर्भरता अथवा आर्थिक स्वतन्त्रता का अर्थ"ाास्त्र कहा जा सकता है। गाँधीवादी विचारकों का यह मत है कि 'स्वदे"ाी' उनका प्रथम और अंतिम उपदे"ा था, बाकी अन्य बातें इसकी आनुशंगिक थीं। गाँधी जी ने स्वदे"ाी की विचारधारा को व्यापक परिप्रेक्ष्य में स्थापित किया। पूरे भारतवर्श में स्वदे"ाी के आन्दोलन, प्रचार–प्रसार में अपना पूरा बल लगाया। आम जनता को स्वदे"ाी और आत्म निर्भरता का पारस्परिक सम्बन्ध समझाया। गाँधी जी ने स्वदे"ाी के विशय में 'हिन्द स्वराज' में (1909) में स्पश्ट किया था– ''सचमुच हमारे देव (मूर्तियाँ) भी जर्मनी के यंत्रों से बनकर आते हैं तो फिर दिया सलाई या

आलपीन से लेकर कांच के झाड़–फनूस की तो बात ही क्या है? मेरा अपना जवाब तो एक ही है। जब ये सब चीजें यंत्र से नहीं बनती थीं तब हिन्दुस्तान क्या करता था? वैसा ही आज भी कर सकता है। जब तक हम हाथ से आलपीन नहीं बनायेंगे तब तक उसके बिना हम अपना काम चला लेंगे। झाड़–फनूस को आग लगा देंगे। मिट्टी के दीये में और हमारे खेत में पैदा हुई रूई की बाती बनाकर दीया जलायेंगे। ऐसा करने से हमारी आँखे खराब होने से बचेंगी, पैसे बचेंगे और हम स्वदे"ाी रहेंगे और स्वराज की धूनी जगायेंगे।''

गाँधी जी ने 14 फरवरी, 1916 को मद्रास में आयोजित मि"ानरी सम्मेलन के अवसर पर 'स्वदे"ाी' की अवधारणा को स्पश्ट करते हुए कहा– ''स्वदे"ाी एक भावना है, जो अपनी निकटस्थ विरासत, अपनी राजनीतिक आन्तरिक संस्थाओं, अपने पैतृक धर्म और अपने दे"ा तथा क्षेत्र में उत्पादित वस्तुओं के उपयोग और सेवा करने तक सीमित है। अर्थ"ाास्त्र के क्षेत्र में भी इसी न्याय से काम लें। मैं उन्हीं वस्तुओं का उपयोग करूँ, जिन्हें मेरे एकदम पास–पड़ोस के लोगों ने बनाया है। उनमें भी यदि कोई कमी है तो उन उद्योगों को सुधारूँ और उन्हें अधिक अच्छा और हर तरह से परिपूर्ण बनाकर उनकी सेवा करें।''[3] कांग्रेस के 1919 में अमृतसर में हुए अधिवे"ान के अवसर पर 'स्वराज इन स्वदे"ाी' भीर्शक से 'यंग इंडिया' में लेख लिखा और उसमें उल्लेख किया कि भारत को वास्तविक सुधार स्वदे"ाो के लिए करना होगा। उनका कहना था कि ''हमने कपड़ा खरीदने के लिए 1918 में साठ करोड़ रूपये भारत के बाहर भेजे हैं, यदि हम इसी दर पर विदे"ाी वस्त्र खरीदते रहेंगे तो भारतीय बुनकर और कत्तिनों को काम किये बिना, इस रा"ा से वर्श–प्रतिवर्श वंचित करते रहेंगे।''[4] गाँधी जी की दृश्टि में स्वदे"ाी एक भावना है। जो हमें यह सिखाती है कि हम सबसे पहले अपने आस–पास, पड़ोस, गांव के लोगों के हित के बारे में सोचें और उनक लिए हितकारी, आर्थिक एवं सामाजिक लाभकारी कार्यो को करें। ऐसा कार्य करने वालों को भी प्रोत्साहित करें। इससे स्थानीय स्तर पर आर्थिक सृदृढ़ता तथा मजबूती आयेगी। यह वह भावना है जो हमें अपने क्षेत्र में उत्पादित वस्तुओं को प्रयोग करना सिखाती है। उसी परिवे"ा के हिसाब से जीना सिखाती है। महात्मा गाँधी ने उल्लेख किया है कि ''अपने पड़ोसियों द्वारा बनाई गयी वस्तुओं का उपयोग करना चाहिए और उद्योगों की कमियों दूर करके उन्हें, ज्यादा सक्षम बनाकर उनकी सेवा करनी चाहिए। मुझे लगता है कि स्वदे"ाी को व्यवहार में उतारा जाये तो मानवता के स्वर्णयुग की अवधारणा की जा सकती है।''

गाँधी जी की स्वदे"ाी की अवधारणा में इस बात पर बल है कि ''उत्पादन की आधारिक इकाइयों यथा गाँव व अन्य समुदायों की आत्मनिर्भरता बनी रहे। सभी लोगों के बुनियादी आव"यकताओं की आत्मनिर्भरता बनी रहें। सभी लोगों की बुनियादी जरूरतों की पूर्ति की जाये। भातिक वस्तुओं की माँग पर नियंत्रण किया जाये ताकि अतिरिक्त संसाधनों का प्रयोग गैर–भौतिक आव"यकताओं की पूर्ति के लिए किया जा सके। गाँधी जी का स्वदे"ाी से आ"ाय मुख्य रूप से तीन बातों से था।'' प्रथम, समाज की बुनियादी इकाइयों तथा गाँव व अन्य समुदायों की आत्मनिर्भरता, जहाँ उत्पादन एक सीमा तक खपत के लिए होता है न कि विनिमय के लिए। उनकी व्यवस्था में विनिमय के लिए उत्पादन इसके बाद के चरण के लिए था।''[5] द्वितीय, राश्ट्र के रूप में भारत और दूसरे राश्ट्रों के बीच समान सिद्धान्तों का व्यवहार किया जाये जिससे न तो हिन्द्स्तान का और न हिन्दुस्तान द्वारा अन्य राश्ट्रों का किसी प्रकार का भाोशण हो।

तृतीय, स्वदे"ाी की अवधारणा में स्वदे"ाी का आ"ाय यह भी था कि ''जब सभी लोगों की बुनियादी जरूरतें पूरी हो जायें जब भौतिक मांगों पर व्यापक रूप से कुछ नियंत्रण होना चाहिए जिससे साधनों का प्रयोग मनुश्य की गैर भौतिक आव"यकताओं को पूरा करने के लिए किया जा सके।''[6] गाँधी जी का विचार था कि स्वदे"ाी की सफलता के लिए राश्ट्रभक्ति के प्रति दृढ़ता और सबल समर्पण आव"यक है। गाँधी जी का वि"वास था कि ''गरीब एवं विकास"ाील अर्थव्यवस्था के लोग स्वदे"ाी का सिद्धान्त लागू होने की दि"ाा में अपेक्षित आव"यक त्याग करने को तैयार हो जायेंगे।''[7] गाँधी जी की स्वदे"ाी की अवधारणा बहुत व्यापक है। यह गाँव से लेकर राश्ट्र तक के हित तक विस्तृत है। इसमें किसान, मजदूर, बुनकर, लोहार, बढ़ई, कुम्हार, धोबी, नाई, दाई, सबकी संयुक्त इकाई है जिसमें एक गाँव अपने आप में अपनी आव"यकताओं को पूरा करने में सक्षम पाता है। यही कारण था कि भारत में गाँवों की संरचना में ये सभी जाति, धर्म के लोग एक ही गाँव में मिल जायेंगे। लेकिन वर्तमान परिस्थिति में अब उनमें बदलाव आ रहा है।

गाँधी जी का वि"वास था कि ''स्वदे"ाी के मार्ग से हटने से भारत पराश्रित होता गया। यह अनुमान किया गया है कि 1770 में दुनिया के कुल उत्पादन में भारत का हिस्सा 23.3 प्रति"ात था। जब कि सम्पूर्ण योरोप का हिस्सा 23.3 प्रति"ात ही था। इसी प्रकार 1770 में दुनिया के कुल निर्यात व्यापार में भारत का हिस्सा लगभग 24 प्रति"ात था। अंग्रेजों ने भारत के आर्थिक आधार और विकेन्द्रित उत्पादन व्यवस्था का ना"ा कर दिया। उनकी भाोशणकारी नीतियों के कारण

भारतीय उद्यमियों और व्यवसायियों के आत्मवि"वास और उनकी वाणिज्यिक सामर्थ्य को नश्ट कर दिया।''[8]

दे"ा में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद आत्मनिर्भरता और औद्योगिक विकास पर जोर दिया गया। लेकिन दे"ा महात्मागाँधी के स्वदे"ाी के सिद्धान्तों को बढ़ावा न दे सका। परिणामस्वरूप विदे"ाी कम्पनियों का भारत में पूँजी निवे"ा और उद्योग पर आधिपत्य बढ़ता चला गया और गाँव के लोग गाँव से निकलकर रोजगार की तला"ा में इन्हीं कम्पनियों में सामान्य कर्मचारी, दिहाड़ी मजदूर बनकर काम करने को बाध्य होने लगे। जिसका चित्रण मुं"ाी प्रेमचन्द ने 'गोदान' उपन्यास में 1936 में ही 'गोबर' के माध्यम से द"ार्ाया था कि भारत का किसान भाोशण को नीतियों से दम तोड़ता जायेगा और उसकी अगली पीढ़ी मिलों, कम्पनियों में कार्य करने के लिए विव"ा होगी। आज भारत की यही भयावह स्थिति है। गाँव की अधिकां"ा जनता रोजगार की तला"ा में भाहर की झुग्गी झोपड़ियों में रहकर भाोशित होने के लिए विव"ा है। कोरोना संकट से एक बार पूरे वि"व को झकझोर कर रख दिया है कि हम अपनी नीतियों में सुधार करें। भारत जैसे राश्ट्र के लिए गाँधी जी की बातें, उनकी विचारधारा वर्तमान काल में हमारा मार्गद"ार्न कर सकती है। हमें अब पुनः अपनी मजबूत ग्रामीण अर्थव्यवस्था, स्वालम्बन, आर्थिक आत्मनिर्भरता के प्रति सजग होना होगा। एक–दूसरे के सहायेगी उद्योग धन्धों को अपनाना होगा। सरकार का भी अधिक से अधिक यह प्रयास होना चाहिए कि गाँवों में रोजगार के अवसर बढ़ाये जायें। स्थानीय स्तर पर ही रोजगार मिल सके। मजदूरों का भाहरों की तरफ पलायन रूके। इसके लिए ठोस कदम उठाने की जरूरत है। तभी कोरोना जैसी महामारी से आर्थिक रूप से भारत निपट सकता है।

सन्दर्भ सूची

1. Swadeshi or Self-Reliance, Seminar No. 469, September, 1998.
2. Sethi, J.D., Gandhi Today, Vikas Publishing House, New Delhi.
3. Gandhiji defined swadeshi on Feb 14, 1916 "Swadeshi is that spirit in us which restricts us to use and service of out immediate surroundings to the exclusion of more remote in that of economics I should we only things that are produce by my immediate neighbours and serve those industries by making them sufficient and complete where they might be found wanting.
4. But the real reform that India needs is swadeshi. The immediate problem before us in not how to run the government of the country, but how to feed and clothe overselves. In 1918 we sent sixty crores of rupees out of India for buying cloth. If we continue to purchase cloth at the rate, we deprive the Indian weavers and spinners of that amount from year to year without giving him or her any work in exchanges. Young India, December, 1919.
5. Sethi, Gandhi Today, Vikas Publishing House, New Delhi.
6. Anand, M.R., The Humanism of M.K. Gandhi, Bombay 1967.
7. Sethi, J.D. Gandhi Today, Vikas Publishing House, New Delhi.
8. Kriplani, Mahatma Gandhi Publication, Division, Government of India.